शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2013

महायान बौद्धधम्म में धर्मकाय की अवधारणा

डॉ मनीष मेश्राम
स्कूल ऑफ बुद्धिस्ट स्टडीज़ एंड सिविलाइजेशन
गौतम बुद्ध यूनिवर्सिटी
ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश

शोध संक्षेप

बौद्धधम्म के प्रमुख दो प्रवाह है। एक थेरवाद और दूसरा महायान। महायान बौद्ध धम्म का उदभव ईसा के समय के आस-पास भारत में हुआ। और जनमानस मे महायानी विशेष सफल हुए। महायान मे कुछ विशेष सिद्धांतों का विकास हुआ, जिसमें धर्मकाय विशेषपूर्ण है। इस अवधारणा से महायान बौद्धधम्म का दक्षिण जगत, तिबेट, चीन, विएतनाम, जापान, कोरिया आदि मे अधिकतर विस्तार हुआ। इस लेख द्वारा धर्मकाय के स्वरूप और लक्षण तत्व की जानकारी दी गयी है।

प्रस्तावना

महायान शब्द का सबसे पहले प्रयोग सर्वोत्कृष्ट सिद्धांत या मत या ज्ञान को वर्णित करने के लिए किया गया था। जिसकी चेतन और अचेतन प्राणियों सहित ब्रह्माण्ड एक अभिव्यक्ति है और केवल इसके माध्यम से ही वे मोक्ष या निर्वाण को प्राप्त कर सकते है। किसी धार्मिक सिद्धांत को महायान का नाम नहीं दिया गया था न ही किसी सैद्धांतिक विवाद से इसका कोई संबंध था। यद्यपि बाद में एक प्रतिशील वर्ग द्वारा इसका ऐसा प्रयोग किया गया था। अश्वघोष महायान बौद्धधर्म के प्रथम व्याख्याता के रूप मे हमे विदित हैं। ईसा के समय के आस-पास रहने वाले अश्वघोष ने अपने श्रदोत्पद्शास्त्र**1** नामक धार्मिक-दार्शनिक ग्रंथ में इस शब्द का प्रयोग किया था। उन्होंने इसका प्रयोग भूत तथता या धर्मकाय महायान बौद्धधर्म के सर्वोत्कृष्ट सत विश्वास एवं सिद्धांत की तुलना एक साधन के साथ की थी जो हम सबको सुरक्षित रूप से संसार के जन्म एवं मृत्यु के समुद्र से निर्वाण के शाश्वत तट की ओर ले जाता है। इसके तुरन्त बाद बौद्धधर्म के दो संप्रदायों के बीच विवाद पुरातनपंथी एवं प्रगतिशील संप्रदायों में ज्यादा उद्घोषित होता चला गया और जब यह अपनी चरम सीमा पर पहुँचा जो संभवतर: नागार्जुन एवं अश्वघोष का समय था अर्थात अश्वघोष के कुछ शताब्दियों बाद एक प्रगतिशील वर्ग ने महायान के विरोध में हीनयान शब्द चतुराई से खोज निकाला। महायानियों ने इसे अपने संप्रदाय के नारे के रूप में स्वीकार कर लिया। तब महायानियों ने हीनयानियों एवं तीर्थंकरो**2** की जबरदस्त रूप में यह कह कर निन्दा की थी की वे चेतन प्राणियों के लिए एक सार्वभौमिक निर्वाण को प्राप्त करने में असमर्थ थे।

हीनयानियों एवं महायानियों में भेद के निश्चित होने से पहले अर्थात नागार्जुन या इससे पहले उन बौद्ध लोगों ने जो अधिक प्रगतिशील एवं व्यापक दृष्टिकोण रखते थे, बुद्ध के अनुयायियों ने तीन यानों में भेद करना प्रारम्भ कर दिया था जैसे बोधिसत्वयान प्रत्येक बुद्धयान और

श्रावकयानय यान वर्ग के लिए ही दूसरा नाम था। बोधिसत्व बौद्धो का वह वर्ग है जो बोधि में विश्वास रखते हुए, जो बोधि मानव में धर्मकाय का प्रतिरूप है, यह वर्ग इस अनुभूति के लिए अपनी तमाम आध्यात्मिक ऊर्जा को लगता है और इसे अपने साथियों के लिए विकसित करता है। प्रत्येक बुद्ध एक अकेला चिंतकश् या एक दार्शनिक होता है, जो एकान्त में रहकर सांसारिक सुखों की क्षणभंगुरता पर शांति से विचार करता, अपनी मुक्ति प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करता है परंतु, अपने साथियों के दुर:ख के बारे में निश्चिंत बना रहता है। यदि धार्मिक दृष्टी से विचार किया जाए तो प्रत्येक बुद्ध शांत, धीर, अहंकाररहित होता है, किन्तु सारी मानवता के लिए उसमें प्रेम का अभाव होता है। श्रावक, जिसका अर्थ सुननेवाला है महायानियों के हिसाब से प्रत्येक बुद्ध से निम्म होता है, क्योकि उसके पास कोई ऐसी बुद्धि नहीं होती है, जो उसको स्वतन्त्र रूप से सोचने के लिए समर्थ बना सके और स्वयं अपने लिए अन्तिम मुक्ति का मार्ग खोज सके। फिर भी एक पवित्र हृदय से युक्त होने के कारण वह बुद्ध के आदेशों को सुनने को तैयार रहता हैए वह उसमें विश्वास करता हैए बुद्ध के द्वारा दिए गए सभी नैतिक नियमों का श्रद्धापूर्वक पालन करता हैए और अपनी सामान्य बुद्धि के संकुचित क्षितिज से पूर्णतया संतुष्ट बना रहता है।

बौद्धधम्म का धार्मिक लक्ष्य

बौद्धधम्म का धार्मिक लक्ष्य सामान्यता धर्मकाय-बुद्ध कहलाता है और कभी-कभी वैरोचन-बुद्ध या वैरोचन-धर्मकाय.बुद्ध कहलाता हैय इसके लिए एक और दूसरा नाम अमिताभ-बुद्ध या अमितायुष बुद्ध है। ये बाद के दोनों नाम जापान एवं चीन के सुखवाती के अनुयायियों द्वारा अधिकांश रूप में प्रयुक्त किए जाते है। फिर हमे प्रायर: शाक्यमुनि बुद्ध एवं तथागत के नाम अपने ऐतिहासिक व्यक्तित्व से पृथक रूप में भी उपलब्ध होते है और उनका तादात्म्य सर्वोच्च सत्य एवं यथार्थ के साथ भी पाया जाता है। फिर नामों की यह सेना भी किसी प्रकार से समाप्त नहीं होती है जिसको बौद्धों की उपजाऊ कल्पना ने अपनी आदर की वस्तु के रूप में खोजा था, जो उनकी अपनी विभिन्न आध्यात्मिक आवश्यकताओं के लिए जरूरी था।

पश्चिम विद्वान सामान्यतया धर्मकाय को धर्म का शरीर के रूप में अनूदित करते है। बौद्धधम्म का धार्मिक लक्ष्य धर्म से उनका तात्पर्य शाक्यमुनि बुद्ध के द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत से है। यह कहा जाता है कि जब बुद्ध स्वयं अपने आपको शाश्वत निर्वाण मे प्रवेश करने की तैयारी कर रहे थेए उन्होने अपने शिष्यों को उनके द्वारा बतलाए गए धर्म को उनका अपना रूप मानकर आदर करने का निर्देश दिया, क्योकि एक व्यक्ति अपने कार्य, कर्म एवं अपने पीछे छोड़े गए शब्दों में लगातार जीवित रहता है। इसीलिए पश्चिम विद्वान धर्मकाय को अपने धर्म में अवतरित बुद्ध के व्यक्ति के रूप में समझने लगे। इस शब्द की यह व्याख्या बहुत सटीक नहीं है। फिर यह महायान के मूलभूत सिद्धान्तों से संबंधित कुछ गंभीर भ्रांतियों को उत्पन्न करने वाली है। ऐतिहासिक दृष्टि से बुद्ध.अवतार के रूप में धर्मकाय का अर्थ धर्म का शरीर रहा होगा। जैसा हम कुछ महायान ग्रन्थों में इसके आकस्मिक प्रयोग से अनुमान लगा सकते है। परन्तु जैसा यह पूर्वी बौद्धो द्वारा प्रयुक्त हुआ है, इसने एक बिल्कुल ही नई भूमिका को ग्रहण कर लिया है, जिसका बुद्ध के द्वारा प्रतिपादित धार्मिक शिक्षाओं के समूह के साथ

कोई सरोकार नहीं है।

धर्मकाय का अर्थ

धर्मकाय के विचार में यह रूपान्तरण महायानियों की धर्म की विभिन्न व्याख्याओं के कारण हुआ है। धर्म एक बहुत ही अर्थपूर्ण शब्द है और अर्थ की एक व्यापक शृंखला को अपने आप में समाहित करता है। यह शब्द धृ ;धातु से बनता है, जिसका अर्थ है धारण करना, ले जाना, सहन करना और धर्म शब्द का आदिम भाव था, जो ले जाता है या धारण करता है या आश्रय प्रदान करता है और फिर इसका अर्थ हो गया जो नियम को बनाता है या चीजों के मार्ग का नियमन करता है अर्थात नियम, संस्था, कानून, सिद्धांत, कर्तव्य, न्याय, सद्गुण, नैतिक पुण्य, चरित्र लक्षण समता, स्वभाव, जो विद्यमान रहता है, यथार्थ, सत आदि आदि। प्राच्यविदों द्वारा धर्म के लिए अधिकांश रूप से प्रयुक्त होने वाला शब्द नियम या सिद्धांत है। जहाँ तक पाली ग्रन्थों का संबंध है, यह बिल्कुल ठीक हो सकता है परन्तु जब हम इस व्याख्या को धर्मधातु, धर्मकाय धर्मलक्ष्य, धर्मलोक जैसे महायानी शब्दों पर लागू करना चाहते हैं, हम एक विचित्र स्थिति में पड़ जाते है कि हम उन शब्दों के अर्थ को समझने में असमर्थ हो जाते है। महायान साहित्य में ऐसे संदर्भ है जिनमें ग्रंथ का पूरा अर्थ इस बात पर निर्भर करता है कि हम धर्म शब्द को कैसे समझते हैं। यह भी कहा जा सकता है कि उन कई कारणों में से एक यह है कि बौद्धधम्म के ईसाई विद्यार्थी क्यों प्राय: महायान के महत्व को पहचानने में विफल हो जाते है। ऐसा उनकी धर्म कि गतल व्याख्या के कारण होता है। अपने विशिष्ट एवं सामान्य अर्थ में महायान बौद्धधम्म के अनेक संदर्भों में धर्म का अर्थ वस्तु, पदार्थ या सत या यथार्थ है यद्यपि इसका प्रयोग प्राय: नियम या सिद्धांत के अर्थ में किया जाता है। काय को शरीर के रूप में अनूदित किया जा सकता है। व्यक्तित्व के अर्थ में नहीं परन्तु पद्धति, एकता और संघठित रूप में अनूदित किया जा सकता है। धर्म एवं काय का सम्मिश्रण धर्मकाय का इस प्रकार कि संघठित संपूर्णता या ब्रह्मांडीय एकता का सिद्धांत है। यद्यपि एक विशुद्ध दार्शनिक विचार के रूप में नहीं परन्तु धार्मिक चेतना के एक लक्ष्य के रूप में। फिर इस सम्पूर्ण ग्रंथ में किसी अँग्रेजी समानान्तर शब्द की अपेक्षा मूल संस्कृत शब्दों को ग्रहण किया जाएगा, जो अँग्रेजी शब्द अब तक प्रयुक्त हुए है। क्योकि धर्मकाय का शब्द पूर्वी बौद्ध लोगों को एक विशिष्ट धार्मिक आस्वाद संप्रेषित करता है, जिसका अब सर्वस्व या किसी गूढ दार्शनिक शब्दों में अनुवाद किया जाता है तो अत्यधिक रुप से दूषित हो जाता है।

धर्मकाय का पारमार्थिक लक्ष्य

जैसा पहले बतलाया जा चुका हैए धर्मकाय दार्शनिक चिन्तन का परिणाम नहीं है और तथता के बिल्कुल समानान्तर नहीं है। धार्मिक चेतना के लक्ष्य के रूप में इसका एक धार्मिक महत्व है। धर्मकाय एक आत्म है। एक संकल्प और ज्ञाता पुरुष, एक ऐसा जो इच्छा एवं बुद्धि है, विचार एवं कार्य है। जैसा महायानी इसे समझते है, तथता की भाँति यह एक गूढ तात्विक सिद्धांत नहीं है, परन्तु यह एक जीवन्त भावना है, जो अपने आपको प्रकृति एवं विचार में अभिव्यक्त करती है। इस भावना की अभिव्यक्ति के रूप में ब्रह्माण्ड अन्धी शक्तियों का एक अर्थहीन प्रदर्शन नहीं है न ही यह विरोधी मशीनी शक्तियों के लिए संघर्ष का क्षेत्र है। क्योकि बौद्ध लोक धर्मकाय पर

असंख्य पुण्य एवं सद्गुणों और एक परम पूर्ण बुद्धि का आरोप करते है और इसको प्रेम एवं करुणा का अक्षय मूल स्रोत बतलाते है और यह इसी संदर्भ में ही कि केवल उदासीन एवं निर्जीव तात्विक सिद्धांत कि अपेक्षा धर्मकाय अंतिम रूप में एक बिल्कुल भिन्न ही पक्ष को ग्रहण करता है। अवन्तसकसूत्र धर्मकाय की प्रकृति से संबंधित कुछ व्यापक कथन निम्न प्रकार से देता है - त्रेलोक में अपने आपको अभिव्यक्त करता हुआ धर्मकाय अशुद्धियों एवं इच्छाओं से मुक्त है। कर्म की पुकार को स्वीकार करता हुआ यह अपने आपको यहाँ-वहाँ स्वयं सर्वत्र उदघाटित करता है। यह एक व्यक्तिगत यथार्थ नहीं है, यह मिथ्या अस्तित्व भी नहीं है, परन्तु यह सार्वभौमिक एवं विशुद्ध है। यह कहीं से नहीं आता है, यह कहीं भी नहीं जाता है, यह अपने बारेमें कोई दावा नहीं करता है, न ही यह उच्छेद के अधीन है। यह हमेशा ही शांन्त एवं शाश्वत है। यह एकाकी है और सभी संकल्पों से शून्य है। धर्म के इस शरीर की कोई सीमा नहीं है। कोई दिशा नहीं है। परन्तु यह सभी शरीरों में स्थित है। इसका स्वतंत्र या सहजता अबोधगम्य है, शरीरी वस्तुओं में इसकी आध्यात्मिक उपस्थिति अबोधगम्य है। शारीरिकता के सभी स्वरूप इसमें विद्यमान है। यह सभी पदार्थों की सृष्टि करने में समर्थ है। कर्म की प्रकृति एवं स्थिति की आवश्यकता के अनुसार कोई भी ठोस भौतिक शरीर धारण करते हुए यह सभी सृष्टियों को प्रकाशित करता है। यद्यपि यह बुद्धि का कोष है, यह वैशिष्ट्य शून्य है। ब्रह्माण्ड में ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ यह शरीर विद्यमान नहीं है। ब्रह्माण्ड उत्पन्न होता है, परन्तु यह शरीर हमेशा ही विद्यमान रहता है। यह सभी विरोधों एवं विपरीतों से मुक्त है। फिर भी यह सभी पदार्थों में उनको निर्वाण की ओर अग्रसर करने के लिए कार्य कर रहा है। ऊपर धर्मकाय का एक सामान्य एवं संक्षिप्त वर्णन दिया गया है, परंतु इसका और अधिक विस्तृत विवरण नीचे उद्धृत करता हूँ ताकि हम इस सर्वोच्च सत के विशिष्ट बौद्ध स्वरूप को और स्पष्टता तथा निश्चित रूप से देख सकें।**3** हे बुद्धपुत्रों! तथागत**4** कोई विशिष्ट धर्म नहीं है, न ही यह एक विशिष्ट प्रकार की गतिविधि है, न ही इसका कोई विशिष्ट शरीर है, न ही यह किसी विशिष्ट स्थान में निवास करता है, न ही इसका मुक्ति प्रदान करने के कार्य किसी विशिष्ट लोगों तक ही सीमित है। इसके विपरीत यह अपने आप में असंख्य धर्मों, असंख्य गतिविधियोंए असंख्य शरीरो, असंख्यों आकारों को आवृत करता है और सार्वभौमिक रूप से सभी पदार्थों की मुक्ति के लिए कार्य करता है।

धर्मकाय आकाश के समान अनंत है

हे बुद्धपुत्रों! यह आकाश के समान अनंत है। आकाश**5** अपने आपमें सभी भौतिक अस्तित्व को समाए को हुए है और उन अस्तित्व के बीच विद्यमान रहने वाले सभी शून्यों, स्थानों को भी अपने आपमें समाए हुए है। फिर यह आपको सभी संभव दिशाओं में स्थित करता है और फिर भी हम इसके बारे में यह नहीं कह सकते हैं कि यह इस विशिष्ट स्थान पर है या नहीं है क्योंकि आकाश का कोई स्पृश्य रूप नहीं है। तथागत के धर्मकाय के बारे में भी ऐसा ही है। यह अपने आपको सभी स्थानों में प्रस्तुत करता है। सभी दिशाओं, सभी धर्मों में और सभी व्यक्तियों में यह अपने आपको प्रस्तुत करता है। फिर भी धर्मकाय स्वयं उस प्रकार से विशिष्ट नहीं बन पाया है। क्योंकि तथागत के काय के पास कोई विशिष्ट

शरीर नहीं है परन्तु यह अपने आपको वस्तुओं की प्रकृति एवं स्थिति के प्रत्युत्तर में सर्वत्र एवं कहीं भी अभिव्यक्त करता है। हे बुद्धपुत्रों! यह आकाश के समान अनन्त है। आकाश असीम है, अपने आपमें सारे अस्तित्व को समेटे हुए है और फिर भी यह मनोविकार पक्षपात का कोई चिन्हन प्रदर्शित नहीं करता है। तथागत के धर्मकाय के विषय में भी ऐसा ही है। यह सांसारिक एवं धार्मिक सभी अच्छे कामों को प्रकाशित करता है, परन्तु यह कोई मनोविकार या पूर्वग्रह को प्रकट नहीं करता है। क्योंकि धर्मकाय पूर्णतया सभी मनोविकारों एवं पूर्वग्रहों से मुक्त है **6** धर्मकाय सूर्य के समान अनन्त है हे बुद्धपुत्रों! यह सूर्य के समान अनन्त है। पृथ्वी के सभी जीवन्त प्राणियों को सूर्य के प्रकाश द्वारा प्रदत्त लाभ गणनातीत है। उदाहरणार्थ अंधकार का विनाश करने से यह सभी वृक्षों जड़ी बूटियों धान्य पौधों एवं घास को आहार प्रदान करता है, यह उसम को समाप्त करता है। यह आकाश को प्रकाशित करने से वायु के सभी जीवन्त सत्वों को लाभान्वित करता है। इसकी किरणें जल में प्रवेश करने से कमलों को पूर्णरूप से पुष्पित करवाती है। यह सभी आकृतियों एवं स्वरूपों पर बिना भेद-भाव के चमकता है और पृथ्वी के सभी कार्यों को पूर्ण करवाता है। क्योंकि सूर्य से जीवन प्रदान करने वाले प्रकाश की असंख्य किरणें निकलती हैं। हे बुद्धपुत्रों! तथागत की सूर्यकाय के बार में भी ऐसा ही है जो असंख्य तरीकों से सभी प्राणियों को लाभान्वित करता है। अर्थात यह बुराइयों का विनाश करके हमें लाभान्वित करता है। इस प्रकार सभी अच्छी चीजें शीघ्रता से विकसित हो जाती है। यह अपने सार्वभौमिक प्रकाश से हमे लाभान्वित करता है जो सभी प्राणियों के अज्ञान रूपी अंधकार को परास्त करता है। यह अपने दयालु हृदय के माध्यम से हमें लाभान्वित करता है जो सभी प्राणियों को बचाता है और उनकी सुरक्षा करता है यह अपने महान प्रेमी हृदय के मध्यम से हमे लाभान्वित करता है जो सभी प्राणियों को जन्म एवं मृत्यु के दु:ख से मुक्ति प्रदान करता है। यह एक सद्धर्म की स्थापना से हमें लाभान्वित करता है जिसके द्वारा हम सब अपनी नैतिक गतिविधियों में शक्तिशाली बनाते है। यह सत्य में दृढ़ विश्वास प्रदान करने से हमें लाभान्वित करता है जो हमारी आध्यात्मिक अशुद्धियों को शुद्ध करता है। यह हमे बौद्धिक प्रकाश प्रदान करने से लाभान्वित करता है जो सभी प्राणियों के मन.पुष्पों को उद्घाटित करता है। यह हमें एक प्रेरणा से लाभान्वित करता है जो हमें बुद्धत्व का व्यवहार करने में जीवन्त बनाता है। क्योंकि तथागत की काय सार्वभौमिक रूप से बौद्धिक प्रकाश की किरणें संप्रेषित करती है। धर्मकाय का प्रकाश पूर्ण चन्द्र के समान अनन्त है

हे बुद्धपुत्रों! धर्मकाय का प्रकाश पूर्ण चन्द्र के समान अनन्त है जिसके चार आश्चर्यमय लक्षण है। **1** यह अपनी आभा में सभी तारों एवं नक्षत्रों को परास्त करता है ;2 यह अपने आकार में वृद्धि एवं क्षय को प्रदर्शित करता है जैसे जम्बू द्वीप में दृष्टिगोचर होता है; 3 इसका प्रतिबिम्ब प्रत्येक बूँद या स्वच्छ जल के आकार में दिखलाई पड़ता है और 4 जो कोई भी पूर्ण दृष्टि से युक्त है इसे देख सकता है। हे बुद्धपुत्रों! तथागत के धर्मकाय के बारे में भी ऐसा ही है जिसके चार आश्चर्यमय लक्षण है : 1 यह निदानबुद्ध श्रावकों आदि के तारों को भी ग्रास लेता है 2 यह अपने पार्थिव

जीवन में एक निश्चित वैभिन्य प्रकट करता है जो प्राणियों की विभिन्न प्रकृति के कारण है जिसको यह अपने आपको **7** अभिव्यक्त करता है, जबकि धर्मकाय स्वयं शाश्वत है और किसी भी प्रकार से कोई वृद्धि या क्षय प्रकट नहीं करता है 3 प्रत्येक शुद्धहृदय वाले चेतन प्राणी की बोधि में इसका प्रतिबिम्ब दिखलाई पड़ता है और 4 वे सभी लोग जो धर्म को समझते हैं और प्रत्येक अपनी अपनी मानसिक योग्यता के अनुसार मुक्ति प्राप्त करते है. यह सोचते हैं कि उन्होंने अपने ढंग से साक्षात वास्तव में तथागत को पहचान लिया है, जबकि धर्मकाय स्वयं समझने की कोई एक विशिष्ट पदार्थ नहीं हैय परन्तु सार्वभौमिक रूप से सभी बुद्ध.कार्यों को पूर्ण करता है।

धर्मकाय जल के मणिरत्न के समान अनन्त है

धर्मकाय जल के मणिरत्न के समान अनन्त है जिसका आश्चर्यमय प्रकाश अपने संपर्क में आने वाले हर पदार्थ को अपने रंग में रूपांतरित कर देता है। उसको देखने वाले नेत्र विशुद्ध हो जाते है। जहाँ पर भी इसका प्रकाश पहुंचता है वहाँ पर सब प्रकार की मणियों का आश्चर्यजनक प्रदर्शन होता है जो सभी प्राणियों को देखने में आनन्द देता है। तथागत के धर्मकाय के बारे में भी ऐसा ही है जिसको समुचित प्रकार से कोषों का कोष कहा जा सकता है, जो सभी पुण्यों का विश्वकोष एवं बुद्धि की खान कहा जा सकता है। जो कोई भी इस प्रकाश के संपर्क में आता है वह बुद्ध के रंग मे रूपांतरित हो जाता है। जो कोई भी इस प्रकाश को देखता है सभी धर्म के सबसे विशुद्ध नेत्र को प्राप्त कर लेते है। जो कोई भी इस प्रकाश के संपर्क में आता है गरीबी एवं दुर:ख से मुक्त हो जाता है धन एवं प्रसिद्धि को प्राप्त करता है अतुलनीय बोधि के आनन्द का उपयोग करता है।

धर्मकाय और व्यक्तिगत प्राणी

इस कथनों से यह स्पष्ट है कि धर्मकाय या बौद्धिक शरीर इसे जो भी नाम दें मात्र कोई दार्शनिक कल्पना नहीं है जो जन्म एवं मृत्यु सुख एवं दु:ख के संसार से पृथक स्थित है यह मानवता की मूर्खता पर शांत भाव से चिन्तन करता है परन्तु यह एक आध्यात्मिक जीवन है जो नितांत अकेला वास्तविक एवं सत्य है और सभी प्राणियों का उद्देश्य है उपाय के सभी प्रकारों को अतिक्रांत करता है इच्छाओ एवं संघर्षों से मुक्त है और हमारी सीमित समझ की क्षेत्र से बाहर है **8** यह भी स्पष्ट है की धर्मकाय यद्यपि स्वयं अविद्याए क्लेश एवं तृष्णा से मुक्त है मानव प्राणियों को सीमित एवं खण्डित चेतना में प्रकट होता है ताकि हम एक अर्थ में यह कह सकते है कि मेरा यह शरीर धर्मकाय है यद्यपि पूर्ण रूप से नहीं और सामान्य में भी सभी प्राणिओ का शरीर धर्मकाय है और धर्मकाय सभी प्राणियों का शरीर है यद्यपि यह सभी प्राणियों में केवल अपूर्ण एवं आंशिक रूप से ही अनुभूत होता है। क्योंकि हम इस प्रकार अपने में स्वयं धर्मकाय का कुछ अंश ग्रहण कर लेते है अन्तिम रूप मे हमारी सबकी नियति बुद्धत्व को प्राप्त करने की है जब मानव बुद्धि बोधि धर्मकाय से पूर्ण रूप से तादात्म्य स्थापित करती है या उसमें विलीन हो जाती है और जब हमारा पार्थिव जीवन धर्मकाय की इच्छा की अनुभूति बन जाता है।

महाकरुणा के रूप में धर्मकाय

यहाँ एक महत्वपूर्ण विचार हमको बाध्य करता है जो यह है की धर्मकाय न केवल एक बुद्धिमान मन है परन्तु यह एक महाकरुणा हृदय भी है कि

यह न केवल संकीर्णता का देवता है जो कर्म के नियम से बालभर के व्यक्तिक्रम की अनुज्ञा नहीं प्रदान करता है परन्तु वह करुणा का एक अवतार भी है जो एक महत्वहीन पुण्य को भी एक बढ़िया परिणाम देने बाले क्षेत्र में विकसित करने के लिए लगातार श्रम कर रहा है। धर्मकाय गलती करने वाले को कठोर रूप से दंडित करता है और बिना पर्याप्त कारण उनके कर्म की समाप्ति की आज्ञा प्रदान नहीं करता है और फिर भी धर्मकाय के हाथ सर्वोच्च भलाई को वास्तविक रूप देने के लिए हमारे जीवन को हमेशा ही निर्देशित करते हैं। प्रकृति की टीसें इच्छा के पाप संदेश के दोष और खून के छींटे बुराई करने वालों के कर्म वास्तव मे निराशजनक एवं अंधकार पूर्ण होते हैं। परन्तु असीम प्रेम एवं भलाई वाला धर्मकाय इस सांसरिक. करी सम्पादन को एक आनंदमय अन्त तक लाने की लगातार व्यवस्था कर रहा है। प्रत्येक भलाई जो हम करते हैं पुण्यों के सार्वभौमिक भण्डार में विलीन हो जाती है जो किसी भी प्रकार से धर्मकाय से कम या ज्यादा नहीं है। करुणा एवं दयालुता का प्रत्येक कार्य जो हम करते हैए तथागत के गर्भाशय में धारण करता है और वहाँ पर यह पोषित एवं परिपक्व होता है, कर्म के इस संसार मे फल देने के लिए लाया जाता है। अतः कोई भी जीवन इस पृथ्वी पर उद्देशहीन नहीं है। कोई भी भूसी अशमनीय अग्नि में नहीं फेंकी जाती है। महान या महत्वहीन प्रत्येक अस्तित्व धर्मकाय की आभा का प्रतिबिम्ब है और इस प्रकार से यह सबको आलिंगन करने वाले प्रेम के योग्य है। इस दृष्टिकोण को और अधिक समर्थित करने के लिय हम आकस्मिक ढंग से महायानसूत्र **9** से यह उद्धृत करते है एक महान करुणा हृदय से सभी प्राणियों को प्यासी इच्छाओं को वह शांत एवं तरोताजा ढंग से पूरा करता है। वह सबके बारें में करुणा से सोचता है। आकाश के समान उसकी कोई सीमाएं नहीं है। संसार की पूरी सृष्टि को बिना किसी वैशिष्ट्य वह ग्रहण करता है। एक महान करुणामय एवं मैत्री हृदय से सभी चेतन प्राणी उसके द्वारा आलिंगित किए जाते हैं सभी बढ़िया विशुद्ध बेदाग उपायों से असंख्य प्राणियों को वह सुरक्षित रखता है और मुक्ति देता है। अतुलनीय मैत्री एवं करुणा से सार्वभौमिक रूप से सभी प्राणियों की वह परवाह करता है फिर भी हृदय उसका आसक्तिहीन है। क्योंकि उसकी करुणा महान एवं असीम है स्वर्गिक आनंद वह सब पर न्योछावर करता है। वह अपने आपको सारे ब्रह्मांड में प्रदर्शित करता है। जब तक सच्चा बुद्धत्व प्राप्त नहीं होता वह आराम नहीं करेगा। धर्मकाय के बारे में परवर्तित महायानियों का दृष्टिकोण

उपर्युक्त बातें महायान बौद्धधम्म के तथाकथित सूत्र साहित्य से एकांतिक रूप में उधृत की गई है जो इस संप्रदाय के अन्य धार्मिक.दार्शनिक ग्रन्थों से भिन्न है, क्योंकि सूत्रों को स्वयं बुद्ध के कथन के रूप में समझा गया हैए जैसा उनके तात्कालिक शिष्यों द्वारा उल्लिखित किया गया है।**10** इसकी आगे की व्याख्या के रूप में हमे यह देखना चाहिए कि असंग वसुबंधु जैसे लेखक धर्मकाय के विषय में क्या दृष्टिकोण रखते थे। असंग एवं वसुबंधु के महायानसंपरिग्रह नामक ग्रंथ में हम निम्नलिखित कथन पढ़ते है : जब बोधिसत्व धर्मकाय पर विचार करते हैं वे इसके विषय में अपने संबंध में क्या सोचते हैं । यदि संक्षेप में कहे तो वे अपने को बीच में रखकर धर्मकाय के सात लक्षणों पर विचार करेंगे

जो धर्मकाय के निर्दोष गुण एवं आवश्यक कार्य है : 1 धर्मकाय की अद्वितीय अबाधित एवं स्वतंत्र गतिविधि के बारे में सोचो जो सभी प्राणियों में अभिव्यक्त है 2 धर्मकाय के सभी पूर्ण सद्गुणों की शाश्वतता के बारे में सोचो ;3 बौद्धिक एवं प्रभीवी पूर्वग्रहों से इसके पूर्ण स्वतंत्र के बारे में सोचो 4 उन सहज गतिविधियों के बारे मे सोचो जो धर्मकाय के संकल्प ये अबाधित रूप से निकलती हैं 5 धर्मकाय में संग्रहीत आध्यात्मिक एवं शारीरिक संपत्ति के बारे में सोचो 6 इसकी आध्यात्मिक विशुद्धि के बारे में सोचो जिसमे एक पक्षता का कोई भी दाग नहीं है 7 तथागतों द्वारा सभी प्राणियों की मुक्ति के लिए किए गए पार्थिव कार्यों के बारे में सोचोए जो धर्मकाय के प्रतिबिम्ब ही है। जहाँ तक धर्मकाय की गतिविधि का प्रश्न है जो बुद्ध के प्रत्येक मुक्ति कार्य में प्रदर्शित होती है असंग कार्यों के पाँच स्वरूपों का वर्णन करते है 1 यह उनकी बुराइयों को समाप्त करने की शक्ति में प्रदर्शित होती है जो जीवन के दौरान हमारे ऊपर आ पड़ती हैं यद्यपि बुद्ध किसी भी शारीरिक दोष का ईलाज करने में असमर्थ है अंधापन, बहरापन, एवं मानसिक विकार जैसे दोष हम में हो सकते हैं। 2 यह उनके सभी बुराई करने वालों के ऊपर अदम्य प्रभुत्व में प्रदर्शित होता है, यदि वे कभी भी बुद्ध की उपस्थिति में या जाते हैं तो कोई अच्छा कम किए बिना नहीं रह सकते हैं। 3 मुक्ति के विभिन्न अप्राकृतिक एवं अतार्किक तरीकों को विनाश करने की उनकी शक्ति में यह प्रदर्शित किया आया है, जो तरीके सन्यास सुखवाद या ईश्वरवाद के अनुयायियों द्वारा व्यवहार में लाए जाते हैं। 4 उन बीमार चित्तों का इलाज करने की उनकी शक्ति में यह प्रदर्शित किया गया है जो यथार्थ नित्यता और अहंकार.आत्म अर्थात पुद्गलवाद की अविभाज्यता में विश्वास करते हैं। 5 उन बोधिसत्वों पर उनके प्रेरणादायक प्रभाव में यह प्रदर्शित किया गया है जिन्होने अभी भी अचलता की स्थिति को प्राप्त नहीं किया है और उन श्रावकों पर उसके प्रेरणा दायक प्रभाव में भी यह प्रदर्शित किया गया है जिनका विश्वास एवं चरित्र अभी भी अनिश्चय की स्थिति में है। बुद्ध के एक प्रबुद्ध चित्त के माध्यम से सभी प्राणियों पर पड़ने वाले धर्मकाय के वे आध्यात्मिक प्रभाव असंग के द्वारा बतलाए गए हैं और हम उनको धर्मकाय देख चुके है। वे धार्मिक महत्व से युक्त है। बौद्ध दृष्टिकोण के अनुसार धर्मकाय से अनन्त रूप में निसृत होने वाली उन धार्मिक शक्तियों में मानव उत्पादन या कृत्रिम प्रयास का कोई चिन्ह नहीं होता है, परन्तु वे इसकी स्वतंत्र इच्छा से। धर्मकाय सभी चेतन प्राणियों पर असंख्य पुण्य-लाभ और आशीर्वाद प्रदान करने के लिए कोई चेतन एवं संघर्षमय प्रयत्न करता है। इसमें कोई भी मानव उत्पादन का चिन्ह होता तो इसका अर्थ उसमे स्वयं में विरोधी प्रवृत्तियों का संघर्ष होगा जिसमें वे एक दूसरे पर प्रभुत्व प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगी। यह स्पष्ट है की कोई संघर्ष एवं इसका आवश्यक सहायकए या मजबूरी सर्वोच्च धार्मिक यथार्थ के हमारे विचार के साथ असंगत है। पूर्ण सहजता एवं पूर्ण स्वातंत्र्य उन आवश्यक प्रवृत्तियों में से एक है जो हमारी धार्मिक चेतना इसको आदर की वस्तु माने बिना नहीं रह सकती है। अत: बौद्ध लोग बार-बार दृढ़ता से यह कहते हैं कि धर्मकाय की गतिविधि सभी बाह्य एवं आंतरिक प्रयत्न एवं जबर्दस्ती से मुक्त है। सृष्टि या मुक्ति या प्रेम का इसका प्रत्येक कार्य इसकी अपनी स्वतंत्र इच्छा

से निसृत होता है। यह किसी भी प्रकार के संघर्षमय प्रयास से बाधित नहीं होता है जो मानवता के कार्यों के लक्षण है। यह स्वतंत्र, दिव्य इच्छाशक्ति हमारी अपनी स्वतंत्र इच्छाशक्ति एक ऐसे संघर्षमय विरोध में स्थित है जो मानव है और सबसे बढ़िया ढंग से अत्यधिक सीमित भी है। बौद्धों के द्वारा इसको धर्मकाय का पूर्णप्रणिधानबल कहा जाता है।**11** क्योंकि धर्मकाय अपने ही ढंग से कार्य करता हैए यह अपने कम के लिए किसी भी प्रकार का पुरस्कार नहीं माँगता है। यह स्पष्ट है की धर्मकाय का प्रत्येक कार्य हमेशा अपने प्राणियों की सर्वोत्तम भलाई के लिए ही होता है, क्योंकि वे इसकी अभिव्यक्तिया हैं और उनको क्या चाहिए इसे जानना चाहिए। धर्मकाय सर्वत्र ही जहाँ जीवन है अपनी भव्य शान में चमकता है नहीं वह वहाँ भी चमकता है जहाँ मृत्यु है। इस गंभीर अज्ञान के बाद भी हम वास्तव में यह अनुभव कराते हैं कि हम यहाँ हैं और उससे हम पूर्णरूपेण संतुष्ट हैं। क्योंकि हमारा विश्वास है कि यह सब धर्मकाय की रहस्यात्मक एवं आश्चर्यमय इच्छा ;शक्ति के कारण घटित होता है जो सब बढ़िया कामों को करता है और किसी भी प्रकार के पुरस्कार की कामना नहीं करता है।

समारोपण

संक्षेप में कहे तो जैसा हमारी धार्मिक चेतना में प्रतिबिम्बित है धर्मकाय तीन आवश्यक आयामों को ग्रहण करता है पहला यह प्रज्ञा है, दूसरा यह करुणा है और तीसरा यह इच्छा शक्ति है प्रणिधानबल। हम जानते है कि धर्मकाय ब्रह्माण्ड के मार्ग को निर्देशित करता है, अन्धे रूप में नहीं अपितु तार्किक ढंग से, फिर हम जानते हैं कि यह करुणा है, क्योंकि यह सभी प्राणियों को पितृ.कोमलता के साथ आलिंगित करता है1 और अंतिम रूप में हमे यह मानना चाहिए कि यह एक ;शक्ति है, क्योंकि धर्मकाय ने अपनी गतिविधि का यह लक्ष्य निर्धारित कर लिया है कि ब्रह्मांड में सभी बुराइयों का अन्तिम लक्ष्य भलाई ही होगा। इच्छाशक्ति के बिना करुणा एवं प्रज्ञा का अनुभव नहीं होगा, बिना करुणा के इच्छाशक्ति एवं प्रज्ञा अपना प्रभाव खो देगी, बिना प्रज्ञा के करुणा एवं इच्छाशक्ति अतार्किक हो जाएंगे। वास्तव में ये तीन समक्ष है और धर्मकाय की एकता का निर्माण करते है और एकता से मेरा अभिप्राय सम्पूर्ण से है तथा धर्मकाय के स्वरूप में इन तीन चीजों की थोथी एकता से मेरा अभिप्राय नहीं है क्योंकि प्रज्ञाए करुणा एवं इच्छाशक्ति में इस प्रकार केवल हमारी मानवीय चेतना में भेद किया जाता है। बौद्ध लोग विशेष रूप से सुखावती संप्रदाय के बौद्ध लोग धर्मकाय में एक सर्वशक्ति इच्छा ;शक्तिद्धए सभी को आलिंगित करने वाली करुणा एवं सर्वज्ञ प्रज्ञा के अस्तित्व को पहचानते हैं परन्तु वे इसे और ज्यादा ठोस रूप से अभिव्यक्त करना चाहते हैं और कम बुद्धिमान अनुयायियों को मानसिक दृष्टि के सामने और अधिक मानव ढंग से इसे अभिव्यक्त करना चाहते है। इस प्रकार इसका परिणाम यह है कि धर्मकाय ने अपनी संपूर्णता के बावजूद भी सभी मानव प्राणियों से जन्म एवं मृत्यु के दुर:ख से मुक्ति दिलवाने के लिए अपने लिए प्रार्थनाएँ कारवाई। संक्षेप में इस जीवन में सबक़ों आलिंगन करने वाली करुणा एवं धर्मकाय की सर्वज्ञ बुद्धि की अनुभूति ही निर्वाण है। यह अस्तित्व जीवन के कारण का प्रकट होना है जो एक साधारण मानव के जीवन में कमोबेश अज्ञान एवं अहंकार की छाया से ग्रसित रहता है।

महायानी निर्वाण ऊर्जा एवं गतिविधि से परिपूर्ण है जो धर्मकाय के सबको आलिंगन करने वाली करुणा से उत्पन्न होता है। अत: महायान

संदर्भ ग्रंथ:

1 1900 में लेखक द्वारा अँग्रेजी में अनूदित। दी ओपन कोर्ट पब्लिशिंग कम्पनीए शिकागो।

2 बौद्धधर्म के अतिरिक्त किसी भी अन्य धर्म के अनुयायी। यह शब्द कभी-कभी घृणा की भावना से भी प्रयुक्त होता है जैसे ईसाइयों द्वारा काफिर शब्द का प्रयोग।

3 अवतंसकसूत्र बुद्धभद्र द्वारा चीनी अनुवाद पुस्तिका

4 यह वैयक्तिकृत धर्मकाय है।

5 आकाश को हमेशा ही एक वस्तुनिष्ठ इकाई के रूप में कल्पित किया गया है जिसमें सभी पदार्थ विद्यमान रहते है।

6 धर्मकाय अपने प्रेम में सार्वभौमिक है जैसे आकाश अपनी बोधगम्यता में है क्योंकि यह उन मानव इच्छाओं एवं मनोविकारों से पूर्णतया मुक्त है जो अहंकार के परिणाम है और अत: वे हमेशा ही विभेदात्मक एवं एकांतिक होते है।

7 अर्थात धर्मकाय प्राणियों की एक कोटी के लोगों के लिए उनकी आवश्यकता अनुसार अपने आपको अभिव्यक्त करने वाला धर्मकाय अस्तित्व के सभी स्वरूपों को ग्रहण करता है। अत: चेतन प्राणियों के चित्तों मे जितने व्यक्तिपरक ढंग से धर्मकाय व्यक्ति है उतने ही धर्मकाय है यद्यपि वस्तुनिष्ठ रूप से विचार करने पर एक ही परम धर्मकाय है।

8 असंग का महायान संपरिग्रह।

9 अवंतकसुत्त अध्याय 13 पुण्य वाले अध्याय में

10 किसी भी प्रकार से यह ऐसा नहीं है क्योकि महायान सूत्रों में से कुछ बुद्ध के निकटतम बौद्धधम्म मे धर्मकाय की अवधारणा सभी सिद्धांतों मे प्रमुख है। धर्मकाय का साक्षात्कार ही महायान बौद्धधम्म का परम लक्ष्य है। अनुयायियों की अपेक्षा निश्चित रूप से बाद के है, यद्यपि निस्संदेह यह ज्यादा संभव है कि महायान के त्रिपिटक सबंधी अधिकांश महत्वपूर्ण ग्रंथ बुद्ध के निर्वाण प्राप्त करने के कुछ वर्षों में ही संग्रहीत किए गए थे।

11 पूर्वप्रणिधान बलप्राय:मूल या आदिमद्ध प्रार्थना की शक्ति के रूप में अनूदित किया जाता है। शाब्दिक रूप से पूर्व का अर्थ पहला या मूल या आदिम है। पुर प्रणिधान का अर्थ इच्छा या प्रतिज्ञा या प्रार्थना है और बल का अर्थ शक्ति।